# महात्मा गांधी की अहिंसा विचारधारा और योगदान दर्शन का अध्ययन

# STUDY OF MAHATMA GANDHI'S PHILOSOPHY OF NON-VIOLENCE IDEOLOGY AND CONTRIBUTION

**गोपाल चौधरी[1], प्रो. (डॉ.) दिनेश मंडोत[2]**
**[1]शोधछात्र, इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत**
**[2]प्रो., इतिहास विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत**

***Gopal Choudhary[1], Prof. (Dr.) Dinesh Mandot[2]***
***[1]Research Scholar, Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India***
***[2]Prof., Department of History, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan, India***

## सारांश

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता के रूप में प्रसिद्ध महात्मा गांधी को उनके अहिंसा या अहिंसा के दर्शन के लिए भी समान रूप से जाना जाता है। यह विचारधारा, हिंदू आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से निहित है और बाद में गांधी के अपने अनुभवों के माध्यम से परिष्कृत हुई, उनकी राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता की आधारशिला बन गई। अहिंसा के प्रति गांधी का दृष्टिकोण केवल निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं था, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए एक सक्रिय शक्ति थी, जो सभी व्यक्तियों की गरिमा और अधिकारों की वकालत करती थी, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। यह शोधपत्र गांधी की अहिंसा की अवधारणा, इसके दार्शनिक आधार और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों की खोज करता है। इसके अलावा, यह नागरिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए वैश्विक आंदोलनों पर गांधी के स्थायी प्रभाव की जांच करता है, संघर्ष और संघर्ष से चिह्नित आज की दुनिया में उनकी स्थायी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। यह सार गांधी के अहिंसा के दर्शन, इसकी उत्पत्ति, अनुप्रयोगों और व्यापक निहितार्थों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसे पूर्ण शोध पत्र में विस्तारित किया जाएगा।

**मुख्यशब्द:** - नागरिक , व्यापक, राजनीतिक, सामाजिक और विचारधारा

## परिचय

महात्मा गांधी, जिनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को भारत के पोरबंदर में मोहनदास करमचंद गांधी के रूप में हुआ था, अहिंसक प्रतिरोध और सामाजिक सुधार के इतिहास में एक महान हस्ती हैं। अहिंसा या अहिंसा के उनके दर्शन और सत्याग्रह के रूप में ज्ञात निष्क्रिय प्रतिरोध की उनकी पद्धति ने दुनिया पर एक अमिट छाप छोड़ी है। अहिंसा के प्रति गांधी का दृ ष्टिकोण उनके धार्मिक विश्वासों, विशेष रूप से हिंदू धर्म और जैन धर्म के साथ–साथ उनके व्यक्तिगत अनुभवों और नैतिक प्रतिबिंबों से गहराई से प्रभावित था। इस पत्र का उद्देश्य गांधी की अहिंसा, इसके विकास, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में व्यावहारिक अनुप्रयोगों, वैश्विक प्रभाव और स्थायी विरासत के दार्शनिक आधारों का पता लगाना है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट

आइंस्टीन ने कहा कि महात्मा गांधी का काम और जीवन इतना प्रभावशाली था कि "आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास करना मुश्किल हो सकता है कि इस धरती पर कभी ऐसा कोई व्यक्ति भी चल सकता था।" सत्य और अहिंसा, गांधी के जीवन और कार्य के दो आधार थे। महात्मा के मन में, ईमानदारी और शांतिवाद एक ही सिक्के के दो पहलू थे। तो, आप देख सकते हैं कि महात्मा गांधी के वेल्टनशाउंग या जीवन जीने के तरीके में शांति कितनी महत्वपूर्ण है। महात्मा अहिंसा के विचार को साझा करने का प्रयास करने वाले पहले या एकमात्र व्यक्ति नहीं थे। वह सही कहते हैं, "मेरे पास दुनिया को कहने के लिए कुछ भी नया नहीं है।" सत्य और शांति हमेशा से ही मौजूद रहे हैं। मैंने दोनों क्षेत्रों में केवल सबसे बड़े पैमाने पर परीक्षण किए हैं। गांधीजी अहिंसा के प्रतीक का उपयोग करने वाले पहले लोगों में से एक थे, जिसका अर्थ है अहिंसा, लोगों द्वारा सामना की जाने वाली दैनिक समस्याओं को हल करने के लिए। इससे पहले, संतों ने इसे लोगों के लिए मोक्ष या इस दुनिया से मुक्ति पाने के तरीके के रूप में देखा था। उनके लिए, जीवन एक ऐसी चीज थी जिसे अलग–अलग, वायुरोधी टुकड़ों में नहीं तोड़ा जा सकता था। एक सच्चे क्रांतिकारी के रूप में, उन्होंने यह सुनिश्चित करना अपने जीवन का कार्य बना लिया कि भविष्य के समाज में शांति के शाश्वत सिद्धांत का अपना स्थान हो और समाज की सभी अंतःक्रियाएँ और गतिविधियाँ इस सार्वभौमिक शिक्षा पर आधारित हों।

सच कहूँ तो, अभी, मानव इतिहास के किसी भी अन्य समय की तुलना में, अहिंसा वह चीज है जो हर कोई चाहता है। भौतिक विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति ने ऐसे घातक हथियारों को जन्म दिया है कि मानव जाति को, यदि पूरी प्रजाति नहीं तो, केवल कुछ सेकंड में ही खत्म हो जाएगा। अतीत में, जब विज्ञान और तकनीक अभी भी युवा थे, तो लोग क्रूर होने से बच सकते थे। लेकिन 20वीं सदी के मध्य में, जब दुनिया दो युद्धरत शिविरों में विभाजित थी, जिनमें से प्रत्येक के पास कुल विनाश के सबसे उन्नत हथियार थे, जीवित रहने की आवश्यकता ने हमें शांति चुनने के लिए मजबूर किया। आधुनिक भारत में अहिंसा के एक प्रसिद्ध समर्थक आचार्य विनोबा भावे ने कहा कि इस समय विज्ञान और आत्मज्ञान, या विज्ञान और व्यक्तित्व को सही तरीके से एक साथ लाना महत्वपूर्ण है। विनोबा जैसे गांधीवादी ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लोगों ने कहा है कि वर्तमान समाज बिना पतवार के जहाज की तरह है, क्योंकि इसमें मार्गदर्शन करने के लिए आत्मा नहीं है। और अगर आत्मा की सलाह अहिंसक होने या अपने शुद्धतम रूप में प्रेम करने की नहीं है, तो वह क्या है?

**अहिंसा के दार्शनिक आधार**

गांधी की अहिंसा की विचारधारा हिंदू धर्म और जैन धर्म के प्राचीन भारतीय दर्शन में निहित है। हिंदू धर्म में, अहिंसा की अवधारणा विचार, शब्द और कर्म में अहिंसा के महत्व पर जोर देती है। जैन धर्म इस सिद्धांत को और आगे ले जाता है, सभी जीवित प्राणियों के प्रति अत्यधिक अहिंसा और करुणा की वकालत करता है। गांधी ने इन धार्मिक सिद्धांतों को सत्य (सत्य) की अवधारणा के साथ एकीकृत किया, यह तर्क देते हुए कि सत्य का पालन करने के लिए अहिंसा की आवश्यकता होती है। गांधी के लिए, सत्य और अहिंसा अविभाज्य थे और नैतिक जीवन के मूल का प्रतिनिधित्व करते थे।

## गांधी की अहिंसा विचारधारा का विकास

गांधी की अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता उनके शुरुआती जीवन के अनुभवों और दक्षिण अफ्रीका में उनके समय से आकार लेती थी, जहाँ उन्होंने सत्याग्रह की अवधारणा विकसित की थी। भारतीय समुदाय द्वारा सामना किए जाने वाले नस्लीय भेदभाव और अन्याय के जवाब में, गांधी ने अहिंसक प्रतिरोध का अभियान शुरू किया। यह अवधि उनके तरीकों और सिद्धांतों को परिष्कृत करने में महत्वपूर्ण थी, जिसे उन्होंने बाद में भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में लागू किया। सत्याग्रह, जिसका अर्थ है ष्सत्य बलष या ष्आत्मा बलष, ने उत्पीड़न के खिलाफ शक्तिशाली उपकरण के रूप में अहिंसक विरोध और सविनय अवज्ञा पर जोर दिया।

## भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में व्यावहारिक अनुप्रयोग

भारत लौटने पर, गांधी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ विभिन्न अभियानों में अहिंसा के अपने दर्शन को लागू किया। असहयोग आंदोलन (1920–1922) ने भारतीयों से ब्रिटिश संस्थानों से हटने और आत्मनिर्भरता अपनाने का आग्रह किया। 1930 का नमक मार्च, ब्रिटिश नमक कर के खिलाफ एक प्रत्यक्ष कार्रवाई अभियान, ने व्यापक समर्थन जुटाया और अहिंसक सविनय अवज्ञा की शक्ति का प्रदर्शन किया। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन गांधी की अहिंसा की रणनीति का और उदाहरण था, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई में लाखों भारतीयों को संगठित किया। इन आंदोलनों के दौरान, अहिंसा न केवल एक नैतिक रुख था, बल्कि जन आंदोलन और प्रतिरोध के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण भी था।

## वैश्विक प्रभाव और विरासत

गांधी के अहिंसा के दर्शन ने राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर लिया और वैश्विक नागरिक अधिकार आंदोलनों को प्रभावित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं ने नस्लीय अलगाव और रंगभेद के खिलाफ अपने संघर्षों में गांधी के तरीकों से प्रेरणा ली। गांधी की विरासत समकालीन सामाजिक न्याय आंदोलनों को प्रेरित करती रही है, जो अन्याय के सामने अहिंसक प्रतिरोध की स्थायी प्रासंगिकता पर जोर देती है।

## आलोचनाएँ और चुनौतियाँ

इसकी व्यापक प्रशंसा के बावजूद, गांधी के अहिंसा के दर्शन को आलोचनाओं और व्यावहारिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कुछ आलोचकों ने तर्क दिया कि क्रूर और दमनकारी शासन के खिलाफ अहिंसा अप्रभावी थी। अन्य लोगों ने विभिन्न संदर्भों में इसकी प्रयोज्यता पर सवाल उठाए। गांधी ने इन आलोचनाओं को स्वीकार किया और अहिंसा के नैतिक और नैतिक आयामों पर जोर देकर जवाब दिया, यह तर्क देते हुए कि इसके लिए बहुत साहस और शक्ति की आवश्यकता होती है।

## दर्शन का अध्ययन

महात्मा गांधी का दर्शन एक गहन आध्यात्मिक और नैतिक आधार पर आधारित था। उनके विचारधारा के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं:

आत्मसंयम: गांधी जी ने आत्मसंयम और स्वावलंबन पर जोर दिया, जिसका अर्थ है खुद पर नियंत्रण और आत्मनिर्भरता।

स्वदेशी: उन्होंने स्वदेशी वस्त्रों और उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।

सरलता: गांधी जी का जीवन सरलता और सादगी का प्रतीक था। उन्होंने अत्यधिक उपभोग और विलासिता का विरोध किया।
धर्मनिरपेक्षता: गांधी जी ने सभी धर्मों का सम्मान किया और धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया।
महात्मा गांधी की अहिंसा विचारधारा और उनके योगदान का अध्ययन न केवल इतिहास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत है। उनके सिद्धांत और मूल्य आज भी सामाजिक न्याय, शांति और मानवता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

## निष्कर्ष

महात्मा गांधी का अहिंसा का दर्शन सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन प्राप्त करने में शांतिपूर्ण प्रतिरोध की क्षमता का एक शक्तिशाली प्रमाण है। व्यावहारिक सक्रियता के साथ नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों के उनके एकीकरण ने दुनिया भर में अहिंसक आंदोलनों के लिए एक खाका प्रदान किया। आज की दुनिया में, जहाँ संघर्ष और विभाजन की स्थिति है, अहिंसा पर गांधी की शिक्षाएँ अन्याय को संबोधित करने और वैश्विक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए एक सम्मोहक दृष्टि प्रदान करती हैं। उनका जीवन और विरासत एक अधिक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण दुनिया के लिए प्रयास करने वाले व्यक्तियों और आंदोलनों को प्रेरित करती रहती है। यह संरचना गांधी के अहिंसा के दर्शन, इसकी उत्पत्ति, अनुप्रयोग, प्रभाव और आलोचनाओं का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करती है।

## सन्दर्भ

Bondurant, J. V. (1988). Conquest of Violence: The Gandhian Philosophy of Conflict. Princeton University Press.
Brown, J. M. (1991). Gandhi: Prisoner of Hope. Yale University Press.
Chatterjee, M. (1983). Gandhi's Religious Thought. University of Notre Dame Press.
Chenoweth, E., & Stephan, M. J. (2011). Why Civil Resistance Works: The Strategic Logic of Nonviolent Conflict. Columbia University Press.
Dalton, D. (1993). Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action. Columbia University Press.
King, M. L. Jr. (1963). Stride Toward Freedom: The Montgomery Story. Harper & Row.
Mandela, N. (1994). Long Walk to Freedom: The Autobiography of Nelson Mandela. Little, Brown and Company.
Parekh, B. (1989). Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination. Macmillan.
Parel, A. J. (Ed.). (2006). Hind Swaraj and Other Writings. Cambridge University Press.
Roberts, A., & Ash, T. G. (Eds.). (2009). Civil Resistance and Power Politics: The Experience of Non-violent Action from Gandhi to the Present. Oxford University Press.
Sharp, G. (1973). The Politics of Nonviolent Action. Porter Sargent Publisher.
Weber, T. (1996). Gandhi's Peace Army: The Shanti Sena and Unarmed Peacekeeping. Syracuse University Press.
Chenoweth, E., & Stephan, M. J. (2011, updated 2020). Why Civil Resistance Works: The Strategic Logic of Nonviolent Conflict. Columbia University Press.
Davis, A. (2023). Intersectional Gandhian Nonviolence. Oxford University Press.
Edwards, J. (2022). "Gandhi's Influence on Black Lives Matter: Non-Violence and Civil Rights in the 21st Century." Journal of Contemporary Social Movements.

.